मासिक पत्रिका

सैनिक मित्र संवाद

अगस्त, 2021

VOLUME - 01 | ISSUE - 01

राष्ट्र रक्षा न समं पुण्यम्

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु
लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः

75वीं स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

रज्जू भैया

''सादा जीवन उच्च विचार''
चतुर्थ सरसंघचालक

सैन्य शिक्षा

देश में युवाओं के लिए
अनिवार्य हो सैन्य शिक्षा

सैनिक मित्र योजना

देश को सशक्त
बनाने के लिए
एक प्रयास

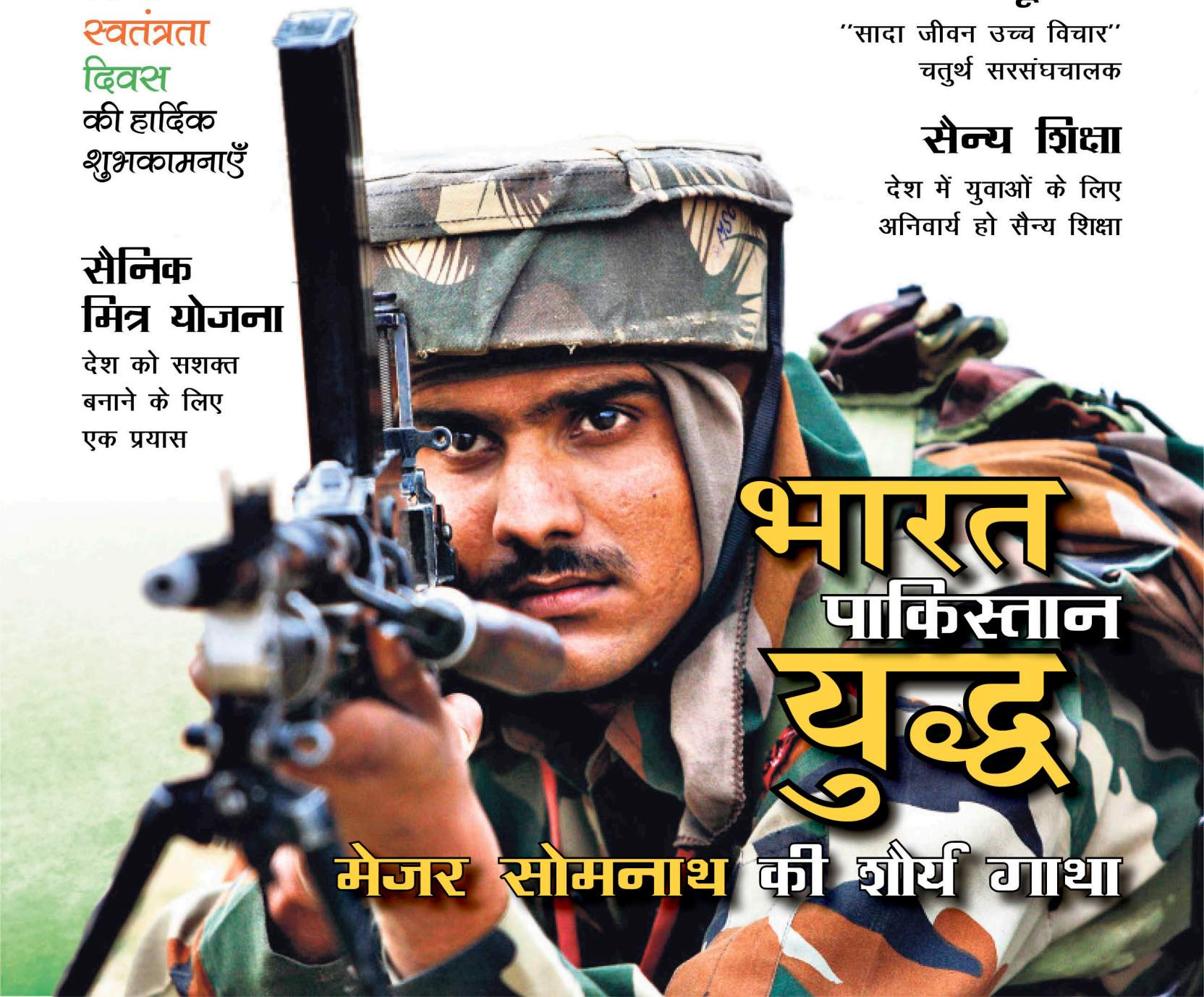

भारत पाकिस्तान युद्ध

मेजर सोमनाथ की शौर्य गाथा

सैनिक मित्र योजना

भारत सदियों से विश्व का मार्गदर्शन करता रहा है। इस गौरव की प्राप्ति का बड़ा कारण था देश सीमाओं का सुरक्षित होना तथा देश में आम जनमानस की जागरूकता। चूक होने के कारण परिस्थिति बदलती चली गई और वर्तमान में स्थिति कुछ भिन्न ही है। अभी देश की बाहरी सीमाएं सुरक्षित नहीं है साथ ही आंतरिक सुरक्षा को भी चुनौती है । इन सब का सामना करने के लिए यद्यपि हमारे पास पर्याप्त सैन्य बल है परंतु देशभक्त नागरिकों के सहयोग के बिना सुरक्षा को बनाए रखना संभव नहीं है। यह सत्य है कि भारत के सभी नागरिक सशस्त्र सैनिक के रूप में कार्य नहीं कर सकते परंतु भारत में कोई भी देशभक्त सैनिक मित्र की भूमिका तो निभा ही सकता है। इस चिंतन के आधार पर देश के सैन्य बल को नागरिक शक्ति प्रदान करने हेतु सैनिक मित्र योजना का विचार किया गया है।

संगठनात्मक रूप से सैनिक मित्र योजना का जन्म जिस पृष्ठभूमि में हुआ वह बहुत ही रोचक है। बुलंदशहर जिले के शिकारपुर तहसील के गांव खंडवाया निवासी श्री राजपाल त्यागी ने समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को निभाने के लिए अपनी 32 बीघा खेती की जमीन को दान करने का संकल्प लिया । उस जमीन के ऊपर समाजोपयोगी गतिविधि चले इस इच्छा से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं से संपर्क किया। और यहीं से जन्म हुआ रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर का । रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर समाज के सहयोग से निर्मित देश का प्रथम सैनिक सरस्वती विद्या मंदिर है । इस प्रथम सैनिक विद्या मंदिर के निर्माण के मंथन से जो अमृत निकला वह है सैनिक मित्र योजना, जिसका कार्यालय इसी विद्यालय में है। रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर से प्रभावित होकर भारत सरकार ने आने वाले वर्षों में 100 और सैनिक विद्या मंदिरों की स्थापना करने का निर्णय लिया है। सैनिक मित्र योजना के माध्यम से जनसमान्य इस विद्यालय में सहयोग कर सकता है।

सैनिक मित्र योजना की मुख्य बातें:

1. भारत का कोई भी देश भक्त ऊर्जावान वयस्क नागरिक सैनिक मित्र योजना का सदस्य हो सकता है।
2. योजना के सदस्य सेना का मनोबल बढ़ाने और देश की सुरक्षा में यथासंभव नागरिक सहयोग प्रदान करने की भूमिका निभाएंगे।
3. सदस्यता से प्राप्त धनराशि को संघर्ष में शहीद हुए सैनिकों के परिवार एवं निर्धन बालकों की शिक्षा में तथा सैनिक स्कूल की सहायतार्थ व्यय किया जाएगा। अभी यह सहायता रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर, खंडवाया, जनपद बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश (RBSVM) को दी जाएगी।
4. सैनिक मित्र योजना की एक समिति होगी जो (RBSVM) के सामंजस्य में कार्य करेगी।

योजना का संचालन

सैनिक मित्र योजना के सदस्य योजना के कार्यकर्ताओं द्वारा बनाए जाएंगे लेकिन मोबाइल संदेश एवं ईमेल के माध्यम से सदस्य बनने हेतु पंजीकरण कराया जा सकता है।

1. सदस्य बनाने का कार्य व्यक्तिगत संपर्क एवं रसीद के माध्यम से किया जाएगा।
2. सैनिक मित्र योजना में स्वयं सेवक के रूप में ग्राम खंड, तहसील स्तर पर गटनायक एवं महानगर, जिला, विभाग एवं प्रांत स्तर पर संयोजक होंगे।
3. राष्ट्रीय स्तर पर एक संयोजक एवं तीन सहसंयोजक होंगे।
4. योजना के लिए अनुभवी मार्गदर्शकों की एक टोली होगी।
5. वर्तमान में योजना का कार्यालय (RBSVM) में रहेगा।

सैनिक मित्र योजना की गतिविधियां:

सैनिक मित्र योजना के सदस्य आपस में मिलकर सैनिक भाव से विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के द्वारा जीवन में राष्ट्र प्रथम का भाव जागरण करेंगे।

1. सैनिकों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित करना।
2. देश में सैनिकों के प्रति आदर का वातावरण निर्माण करना।
3. सेना में भर्ती की तैयारी कर रहे युवाओं को निःशुल्क मार्गदर्शन प्रदान करना।
4. देश भक्ति भाव जागरण में सहयोग करना।
5. शहीद सैनिकों के बाल को एवं सैनिक विद्या मंदिरों को आर्थिक सहयोग प्रदान करना।

सदस्यता

योजना की सदस्यता ₹1100 प्रति वर्ष होगी जिसका नवीनीकरण पुनः ₹1100 देकर कराया जा सकेगा। अधिक वर्षों के लिए भी एक साथ सदस्यता ली जा सकती है । ₹11000 प्रदान कर आजीवन सैनिक मित्र बन सकते हैं। ■

सैनिक मित्र योजना देश के प्रत्येक नागरिक को उसके अपने कर्तव्य पर चलने को जागरूक करने के उपक्रम की अनौखी अवधारणा है।

जो युद्ध में लड़े वही सैनिक नहीं है। देश का प्रत्येक नागरिक अपने अपने स्थान पर देश का सैनिक है। वो मकान बनाता हो, व्यापार करें, गाड़ी चलाये, हिसाब लिखे, खेले, उद्योजक हो, कलाकार हो, बुनकर हो, किसान हो या मजदुर हो, अर्थात कुछ भी हो, अपने स्थान पर वह देश का एक सैनिक ही है। सब एक दुसरे के पूरक है, मित्र है, सहोदर भाई है। सब महत्वपूर्ण है। इस अवधारणा को आगे संगठित रूप से बढ़ाने का सबका संकल्प सफल होने की प्रभु से प्रार्थना करता हुँ।

चरैवेति, चरैवेति।

सुर्य प्रकाश टोंक
क्षेत्र संघ चालक

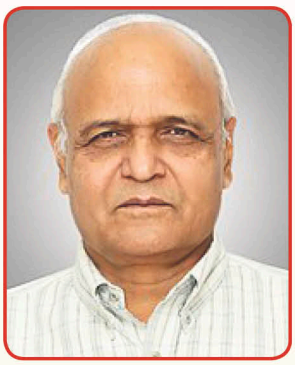

आज विश्व में भारतवर्ष की स्थिति अत्यंत ही महत्वपूर्ण हो चुकी है। विश्व के सभी देश भारत को एक संभावना की दृष्टि से देख रहे हैं। 130 करोड़ से अधिक जनसंख्या और एक लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा वाले वाले हमारे देश की सुरक्षा की जिम्मेदारी हमारी तीनों जल, थल और वायु सेना के कंधों पर है। आज भारत का जन सामान्य अपनी तीनों सेनाओं की उपलब्धियों पर गौरवान्वित हो रहा है । सैनिक मित्र योजना के माध्यम से जन सामान्य को जहां देश की सेनाओं के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाने का अवसर मिलेगा वहीं युवाओं के मन में भारतीय सेना के प्रति एक आकर्षण भी पैदा होगा। इस पुनीत कार्य में सैनिक मित्र संदेश मासिक पत्रिका एक प्रभावी माध्यम सिद्ध होगी ऐसी मेरी शुभकामना है।

प्रोफेसर भगवती प्रकाश शर्मा
उप कुलपति, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय

सैनिक मित्र संवाद के प्रकाशन के अवसर पर भावभीनी शुभकामनाएं भेजते हुए मुझे अपार गर्व एवं हर्ष की अनुभूति हो रही है

मैंने ३१ वर्ष वर्दी में बिताए हैं और ईश कृपा से मेरे चारों पुत्रों ने भी दशकों तक शान के साथ शास्त्र सेनाओं में सेवा की है । आशा है कि इस पत्रिका द्वारा भारत की युवा पीढ़ी को देश की सुरक्षा हेतु सदैव तत्पर राष्ट्रीय सशत्र सेनाओं में सेवा करने की महती प्रेरणा मिलेगी। जय हिंद।

ब्रिगेडियर राज बहादुर शर्मा,
वी एस एम (गौरव सेनानी)

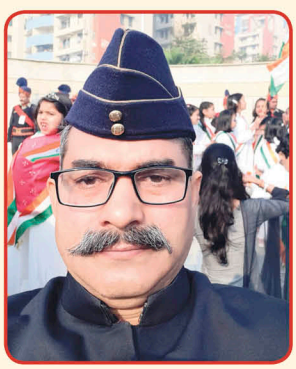

मुझे यह जानकार अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि सैनिक मित्र योजना के सन्देश वाहक पत्र **"सैनिक मित्र संवाद"** का प्रथम संस्करण आजादी के अमृत महोत्सव 15 अगस्त् 2020 के पवित्र शुभअवसर स्वाधीनता दिवस पर प्रकाशित होने जा रहा हैं।

मै सैनिक मित्र संवाद के सफल प्रकाशन एंव सैनिक मित्र योजना के उद्वेश्यपूर्ति हेतु प्रभु से कामना करता हुँ।

जयहिन्द, भारतवन्दे मातरम् ।

ले0 कर्नल लाखन सिंह

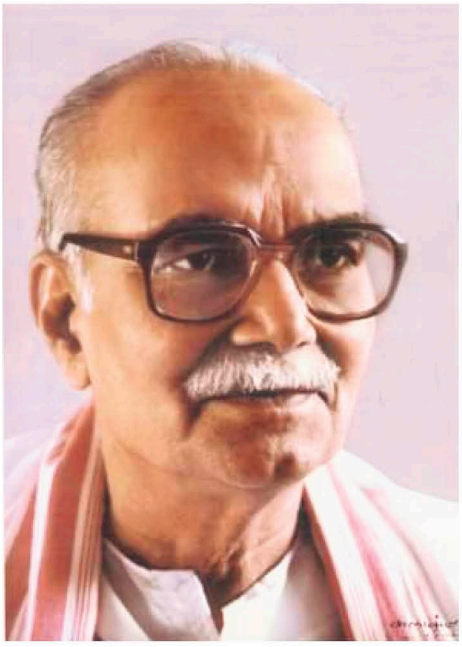

प्रोफसर राजेन्द्र सिंह

रज्जू भैया
एक संक्षिप्त परिचय

रज्जू भैया का जन्म बुलंदशहर जनपद के गांव बनैल में 29 जनवरी 1921 में हुआ था । इनके पिता जी का नाम कुंवर बलबीर सिंह और माता जी का नाम श्रीमती ज्वाला देवी था। इनके पिताजी प्रथम भारतीय मुख्य अभियंता थे। अध्ययन काल में रज्जू भैया एक असाधारण विद्यार्थी थे। जब वह एमएससी कर रहे थे तब उनके प्रायोगिक परीक्षा में नोबेल पुरस्कार विजेता श्री सी वी रमन परीक्षक बनकर आए तथा उनकी योग्यता, कार्य दक्षता और ज्ञान से प्रभावित होकर उनकी उत्तर पुस्तिका पर एक टिप्पणी अंकित कर दी जिसमें लिखा था, "I have never seen such type of exceptionally brilliant student in my life." इनके गुणों से प्रभावित होकर न्यूक्लियर फिजिक्स में अनुसंधान के लिए भी कहा था।

प्रोफेसर रज्जू भैया ने प्रयाग विश्वविद्यालय में भौतिक विज्ञान के शिक्षक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। वे अपने विद्यार्थियों में लोकप्रिय एवं सरल थे और विषय का सरलीकरण करके पढ़ाना उनकी लोकप्रियता का कारण रहा। प्रोफेसर रज्जू भैया चतुर्थ सरसंघचालक थे। वह 1994 में सरसंघचालक बने और सन 2000 तक इस पद को सुशोभित किया। 14 जुलाई 2003 को पुणे में उनका निधन हुआ।

प्रोफेसर रज्जू भैया सभी मनुष्यों को मूलतः नेक और अच्छा मानते थे। उनका कहना था कि प्रत्येक मनुष्य में अच्छाई देखकर ही उसके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। अपने पूर्ववर्ती सरसंघचालकों की भांति वह भी स्वदेशी में विश्वास करते थे। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करना उनका प्राथमिक कार्य था। उनके इन विचारों से प्रेरणा पाकर वर्तमान में स्वयंसेवक गांव के उत्थान हेतु कार्य में लगे हुए हैं। 1995 में उन्होंने गांव को भुखमरी बीमारी एवं अशिक्षा रहित करने की घोषणा की थी। विश्वबंधुत्व की भावना पर बल दिया। प्रोफेसर रज्जू भैया के देहावसान के उपरांत इलाहाबाद विश्वविद्यालय का नाम प्रोफेसर राजेंद्र सिंह विश्वविद्यालय प्रयागराज तथा पूर्वांचल में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय में प्रोफेसर रज्जू भैया के नाम से प्रोफेसर राजेंद्र सिंह इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल साइंसेज फॉर स्टडी एंड रिसर्च खोला गया। ■

रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर

रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर (आरबीएसवीएम) की संकल्पना अपने छात्रों को जीवन के सभी क्षेत्रों में फलने–फूलने के पर्याप्त अवसर प्रदान करने के लिए की गई है। स्कूल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और हमारे कैडेटों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है, ताकि वे न केवल रक्षा बलों में बल्कि मानव प्रयासों के सभी क्षेत्रों में अनुकरणीय नेतृत्व प्रदान करें और समाज के उपयोगी सदस्य और हमारे महान मिशन के योग्य नागरिक बनें।

सैनिक स्कूल का उद्देश्य छात्रों को देश

की रक्षा सेवाओं में अधिकारियों के रूप में नेतृत्व करने के लिए तैयार करना है। स्कूल एक राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा के माध्यम से स्मार्ट और होनहार छात्रों का चयन करते हैं और उनके व्यक्तित्व को राष्ट्र के नेता बनने के लिए ढालते हैं। आवासीय विद्यालयों के दृष्टिकोण से, सीबीएसई पाठ्यक्रम सबसे अच्छा है। सीबीएसई एक बहुत ही संतुलित पाठ्यक्रम है जहां शिक्षा और खेल को समान महत्व दिया जाता है। ICSE में शिक्षाविदों को अधिक महत्व दिया जाता है, इसलिए खेलों के लिए शायद ही समय बचा हो। हमारा स्कूल शारीरिक विकास को महत्व देता है, इसलिए सीबीएसई हमारे लिए अकादमिक और शारीरिक प्रशिक्षण दोनों के लिए सबसे अच्छा पाठ्यक्रम है। ■

भारत पाकिस्तान युद्ध

(1947–48)

(सूर्योदय से सूर्यास्त तक की लड़ाई – 3 नवंबर 1947)

सोमनाथ शर्मा

मेजर सोमनाथ शर्मा ने अपनी आँखों में एक चमक के साथ अपना सिर उठाया। उसका पलस्तर वाला हाथ बंकर के पास टिका हुआ था। उसने सूर्य की ओर देखा जो धीरे–धीरे पश्चिम की ओर बढ़ रहा था। उनके जीवन का हर पल अब एक चुनौती था। वह अब सूरज से आगे निकलने के लिए तैयार था लेकिन कोई तनाव नहीं था, उगते सूरज का स्वागत किया गया। अपने देश की महिमा के लिए अपना जीवन देने की प्रत्याशा में उसका चेहरा चमक रहा था और उत्साहित था।

इसलिए, गुप्त सूचना मिलने के बाद कि पाकिस्तानी सेना के नेतृत्व में लगभग एक हजार पठानों (सशस्त्र आदिवासियों) का एक समूह, पाकिस्तान द्वारा सहायता प्राप्त और उकसाया गया, श्रीनगर की ओर बढ़ रहा था। मेजर सोमनाथ शर्मा के नेतृत्व में 4 कुमाऊं की ए और डी कंपनी और कैप्टन रोनाल्ड वुड के नेतृत्व में प्रथम पैरा कुमाऊं के सैनिकों को श्रीनगर हवाई क्षेत्र के करीब स्थित एक छोटे से शहर बडगाम भेजा गया। रिपोर्ट्स के मुताबिक, पाकिस्तानी सेना के नेतृत्व में पठानों का मकसद श्रीनगर एयरबेस पर कब्जा करना, आपूर्ति में कटौती करना और भारतीय सेना को अप्रभावी बनाना था। लेकिन मेजर सोमनाथ शर्मा के नेतृत्व में सैनिकों को घुसपैठियों को खोजने और उन्हें लगे रहने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी।

मेजर शर्मा की रिपोर्ट के अनुसार सुबह–सुबह उनकी कंपनी ने मोर्चा संभाल लिया था और गांव के पश्चिम में एक पहाड़ी पर खाई खोद दी थी। प्रथम पैरा कुमाऊँ ने भी गाँव के दक्षिण–पूर्व में स्थान ले लिया था, और उनके अनुसार गाँव शांत और मृत मौन था। ग्रामीण अपने काम में व्यस्त थे लेकिन डरे हुए लग रहे थे। उन्होंने देखा कि कुछ ग्रामीण एक नाले (जल निकाय) के पास जमा हो गए थे जैसे कि उन्होंने वहां शरण ली हो। क्योंकि गांव शांत लग रहा था, प्रथम पैरा कुमाऊं को पूर्व का चक्कर लगाने और पंजाब बटालियन के संपर्क में आने के बाद एयरबेस पर वापस जाने का निर्देश दिया गया था। उन्होंने आदेशों का पालन किया और वापस आकर दोपहर 1 बजे श्रीनगर पहुंचे। बडगाम में स्थिति नियंत्रण में थी, इसलिए मेजर सोमनाथ को अपनी कंपनी को वहां से हटाने का आदेश दिया गया, हालांकि उन्होंने शाम तक कंपनी को बडगाम में रखना पसंद किया। इस बीच, सीमा के दूसरी ओर, लश्कर (समूह) संदेह से बचने के लिए छोटी इकाइयों में जमा हो रहा था।

एक पाकिस्तानी मेजर जो इलाके में गश्त कर रहे भारतीय सैनिकों को चकमा देने की योजना बना रहा था। यह एक बड़ी और सुविचारित योजना थी। दोपहर 2 बजे के आसपास, जब ए कंपनी इलाके से निकली थी, पाकिस्तानी मेजर ने और इंतजार नहीं करने का फैसला किया, और जैसे ही लगभग 700 घुसपैठिए जमा हुए, उन्होंने हमला कर दिया। दोपहर करीब 2.30 बजे गांव से गोलियां चलती देख मेजर सोमनाथ दंग रह गए. उन्होंने ब्रिगेड को सूचित किया कि उनकी बटालियन पर हमले हो रहे हैं और उन्हें आशंका है कि उनका प्रतिशोध गांव में मौजूद महिलाओं और बच्चों के लिए घातक साबित हो सकता है। तब तक पहाड़ी से और भी घुसपैठिए वहां पहुंच चुके थे। जो सैनिक बच गए थे, उन्होंने बाद में बताया कि मेजर सोमनाथ एक खाई से दूसरी खाई में भागते हुए उनका मनोबल बढ़ा रहे थे और उन्हें पूरे साहस के साथ लड़ने के लिए प्रेरित कर रहे थे। सैनिकों के साहस और दृढ़ संकल्प ने दुश्मन के शुरुआती हमलों को असफल बना दिया।

लेकिन पाकिस्तानी पठानों की ताकत बड़ी थी और इसका पूरा फायदा उठाकर उन्होंने अपनी संख्या को और बढ़ाकर और दबाव बनाना शुरू कर दिया। जल्द ही उन्होंने डी कंपनी को तीन तरफ से घेर लिया और उस पहाड़ी पर चढ़ना शुरू कर दिया जहां खाइयां स्थित थीं। मेजर सोमनाथ जानते थे कि उनके सैनिक दुश्मन की तुलना में कम थे। उन्होंने ब्रिगेड कमांडर को हथियार और गोला–बारूद और अतिरिक्त सैनिक भेजने को कहा। सैनिकों के आने तक दुश्मन को बांधे रखना एक बड़ी चुनौती थी। उन्हें पता था कि अगर काफी समय

शेष पृष्ठ 6 पर

परमवीर चक्र

21
परमवीर चक्र

98
अशोक चक्र

213
महावीर चक्र

492
कीर्ति चक्र

1338
वीर चक्र

2148
शौर्य चक्र

'परमवीर चक्र' भारत का सर्वोच्च शौर्य सैन्य पुरस्कार है और यह पुरस्कार दुश्मनों की उपस्थिति में उच्चकोटि की शूरवीरता और बलिदान के लिए दिया जाता है। यह सम्मान मरणोपरांत भी दिया जा सकता है। भारतीय सेना के किसी भी अंग के अधिकारी या कर्मचारी इस पुरस्कार के पात्र होते है।

महावीर चक्र

'महावीर चक्र' भारत का युद्ध के समय वीरता का पदक है। यह सम्मान सैनिकों और असैनिकों को असाधारण वीरता या प्रकट शूरता या बलिदान के लिए दिया जाता है। यह मरणोपरांत भी दिया जा सकता है।

कीर्ति चक्र

वरियता मे यह 'महावीर चक्र' के बाद आता है। इस सम्मान की स्थापना 4 जनवरी 1952 को हुई थी। 198 बहादुरों को यह पुरस्कार मरणोपरांत दिया गया है। पुरस्कार सेना, वायुसेना और नौसेना के ऑफिसर्स और जवानें के अलावा, टेरिटोरियल आर्मी और आम नागरिकों को भी दिया जाता है।

वीर चक्र

'वीर चक्र' सम्मान सैनिकों को असाधारण वीरता या बलिदान के लिए दिया जाता है। यह मरणोपरांत भी दिया जा सकता है। इस पुरस्कार की स्थापना 26 जनवरी 1950 को हुई थी।

अशोक चक्र

'अशोक चक्र' भारत का शांति के समय का सबसे सर्वोच्च वीरता पदक है। यह सम्मान सैनिकों और असैनिकों को असाधारण वीरता, शूरता या बलिदान के लिए दिया जाता है। यह मरणोपरांत भी दिया जा सकता है।

शौर्य चक्र

'शौर्य चक्र' भारत का शांति के समय वीरता का पदक है। वरीयता में यह 'कीर्ति चक्र' के बाद आता है। यह सम्मान सैनिकों और असैनिकों को शांति काल के समय असाधारण वीरता या प्रकट शूरता या बलिदान के लिए दिया जाता है। यह भी मरणोपरांत दिया जा सकता है।

भारत पाकिस्तान...

पृष्ठ 5 का शेष

तक काम नहीं किया गया तो घुसपैठिए श्रीनगर एयरबेस तक पहुंच सकते हैं और उस पर कब्जा कर सकते हैं। वह जानता था कि उसकी कंपनी दुश्मन को ज्यादा दिन तक नहीं रोक पाएगी, उसके लिए अपने सैनिकों की इच्छा शक्ति बनाए रखना यह एक चुनौती थी। और, इसलिए, वह अपनी सुरक्षा की अनदेखी करते हुए खुले युद्ध के मैदान में अपने सैनिकों के मनोबल और इच्छा शक्ति को बढ़ा रहा था। पांच घंटे तक इसी तरह लड़ाई चलती रही।

अंत में, उनका गोला बारूद समाप्त हो गया। जब उन्होंने ब्रिगेड को सूचित किया, तो ब्रिगेड ने उन्हें वापस आने के लिए कहा। आदेश मिलने के बाद, मेजर सोमनाथ एक सैनिक को अपनी बंदूक लोड करने में मदद करने के लिए दूसरी खाई में गए, इसी बीच एक मोर्टार का गोला आया और गोला बारूद के डिब्बे पर गिर गया। बड़ा धमाका हुआ। मेजर सोमनाथ शर्मा के साथ, उनके अर्दली और एक जूनियर कमीशंड अधिकारी (JCO) की जान चली गई।

भारतीय सेना ने पूरी ताकत से जवाबी कार्रवाई की और 5 नवंबर की तड़के बडगाम पर कब्जा कर लिया। लेकिन अपने चार कुमाऊं बहादुरों को खो दिया – मेजर सोमनाथ शर्मा, सूबेदार प्रेम सिंह मेहता और 20 सैनिक। मेजर सोमनाथ शर्मा को अनुकरणीय नेतृत्व और भारतीय पोस्ट पर वापस कब्जा करने में वीरता के लिए परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया था। ■

भारत में युवाओं के लिए अनिवार्य सैन्य शिक्षा पर विचार हो

रवि पाराशर
वरिष्ठ पत्रकार

विश्व परिदृश्य पर नजर डालें, तो आतंकवाद आज इंसानियत के अस्तित्व के लिए सबसे बड़े खतरों में से एक दिखाई देता है। गौर करें, तो पाएंगे कि किसी भी राष्ट्र के नागरिक में राष्ट्रीयता की भावना ही इस निकृष्टतम खलनायक से लड़ने का मुख्य हथियार हो सकती है। लड़ाई क्योंकि वैचारिक अथवा भावनात्मक धरातल पर ही नहीं, बल्कि खुलेआम भौतिक रूप से लड़ी जा रही है, इसलिए नागरिकों में बौद्धिक प्रतिरोध की क्षमता के साथ ही युद्ध कौशल में निपुणता की भी जरूरत होती है।

भारत के संदर्भ में बात करें, तो हमारी सेना आतंकवादियों से सीमाओं की रखवाली करने में सक्षम है। लेकिन आतंकवाद अब हमारे समाज के बहुत से अंधेरे कोनों में पसर चुका है, इसलिए आंतरिक तौर पर बहुत सतर्क रहने की जरूरत है। जहां आतंकवाद बड़ा खतरा है, वहीं समाज में बेटियों की अस्मिता की रक्षा भी बहुत बड़ा मसला है। ऐसी तमाम नकारात्मक परिस्थितियों से निपटने के लिए देश के युवा वर्ग को बहुआयामी दृष्टिकोण से तैयार करने की आवश्यकता है।

ऐसी दुश्चिंताओं के बारे में हम जब भी चिंतन करते हैं, तो एक विचार जो सबसे पहले मन में उभरता है, वह है बेटियों को आत्मरक्षा के लिए सक्षम बनाया जाना चाहिए। साथ ही बेटे–बेटियों के मन में देश की सीमाओं और देश के अंदर व्याप्त हो रही बुराइयों का प्रतिरोध करने की भावना जगनी चाहिए और तदनुसार उन्हें शक्ति अर्जित करने योग्य बनाया जाना चाहिए। क्या ऐसा करने के लिए देश में अनिवार्य सैन्य शिक्षा की जरूरत है? इस प्रश्न पर बहुत बार चर्चा होती है, किंतु आजादी के साढ़े सात दशक बाद भी किसी निर्णय पर नहीं पहुंचा जा सका है।

देश में पढ़ाई के साथ–साथ एनसीसी (नेशनल कैडेट कोर) की ट्रेनिंग की व्यवस्था तो स्वैच्छिक तौर पर एक स्तर तक की गई है, लेकिन सैनिकों की तरह ट्रेनिंग अनिवार्य नहीं बनाई गई है। हर 26 जनवरी की परेड में हम एनसीसी के दस्तों को शान से राजपथ पर परेड करते हुए देखते हैं लेकिन एनसीसी की ट्रेनिंग सभी शैक्षिक संस्थानों में उपलब्ध नहीं है। हो सकता है कि आजादी के तत्काल बाद अनिवार्य सैन्य शिक्षा की आवश्यकता महसूस नहीं की गई हो, लेकिन अब बदले हुए हालात में क्या इस बारे में गंभीरता से विचार नहीं करना चाहिए?

दुनिया में बहुत से देश हैं, जहां युवाओं को अनिवार्य तौर पर सैन्य शिक्षा लेनी पड़ती है। सेना में शामिल भी होना पड़ता है। कुछ अपवादों को छोड़कर इजराइल में लड़कों को तीन साल और लड़कियों को दो साल सेना में शामिल होना पड़ता है। वहां हर 10 साल में सैन्य प्रशिक्षण लेना पड़ता है। टर्की, ग्रीस, साइप्रस, ईरान, ब्राजील, उत्तर कोरिया, दक्षिण कोरिया और क्यूबा समेत और भी कई देशों में युवाओं को सेना में अनिवार्य तौर पर भर्ती होना पड़ता है। इन देशों में युवाओं को एक निश्चित अवधि तक सेना में अनिवार्य रूप से सेवा करनी पड़ती है। उन्हें नियमित सैनिकों की तरह प्रशिक्षण के दौर से भी अनिवार्य तौर पर गुज़रना पड़ता है।

अमेरिका में और भी व्यावहारिक व्यवस्था है। वहां सैन्य प्रशिक्षण अनिवार्य तो नहीं है, लेकिन युवा अपनी इच्छा से दो साल सेना में नौकरी कर सकते हैं। ऐसा करने वाले युवाओं को इसके बाद बहुत सी सुविधाएं अमेरिका मुफ्त में देता है। सैन्य प्रशिक्षण और सेना में सेवा देने के कारण आत्मविश्वास से भरे युवा जीवनपर्यंत चुनौतियों से जूझने लायक बन जाते हैं। उन्हें जीवन में अनुशासन की महत्ता अच्छी तरह समझ में आ जाती है। आवश्यकता पड़ने पर वे अपने देश की सीमाओं की रक्षा और अंदरूनी खतरों से लड़ने के लिए उपलब्ध होते हैं। वे हथियार चलाने और दूसरे युद्ध कौशल में दक्ष होते हैं, इसलिए उन्हें अचानक सामने आई परिस्थिति में मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ता।

भारत में भी अगर ऐसी किसी व्यवस्था के बारे में गंभीरता से विचार किया जाए, तो उत्तम रहेगा। भारतीय युवाओं में आत्मविश्वास जगाने के लिए इससे बेहतर कुछ और विकल्प नहीं हो सकता। युवा आत्मविश्वास से भरा होगा, तो आत्मनिर्भरता की उसकी राह भी बहुत आसान हो जाएगी। ■

वीरों के अनुभव

समय का बदलाव होता है संस्कारों का नहीं। हमारा संस्कार है मातृभूमि सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपरी। धन्यवाद

—कर्नल डॉ जे पी सिंह,
परामर्श नोएडा

देश है तो हम हैं, देश नहीं तो हम नहीं! और देश हमारा है हिंदुस्तान, इसलिए हिंदू समाज का इस देश पर जन्मसिद्ध अधिकार है! हमेशा याद रखें "धर्मो रक्षति रक्षिता" अर्थात् जो धर्म को रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है।

—लेफ्टिनेंट भास्कर शुक्ला

स्वयं से पहले सेवा' जीवन को समझने और इसे सही तरीके से जीने का एक शक्तिशाली उपकरण है, खासकर युवा दिमाग के लिए, आज के विचित्र समय में हमें अपने जीवन में आत्मसात कर लेना चाहिए।

—नायक सुबेस सिंह भाटी

मंज़िल से आगे बढ़कर , मंज़िल तलाश कर
मिल जाए तुझको दरिया तो समंदर तलाश कर ।
हर शीशा टूट जाता है पत्थर की चोट से
जो पत्थर ही टूट जाए वो शीशा तलाश कर ।

—शुभम ब्रह्मभटट्

आज समय की मांग है कि सभी देशवासी एकजुट होकर अपने अभूतपूर्व भारत का गौरव और सम्मान बढ़ाएं, चाहे हम किसी भी क्षेत्र में कार्यरत हैं हमें अपने प्यारे तिरंगे के की शान बढ़ानी है। जय हिंद!

—कर्नल एस.के. साहनी

शहीद होने वाला रणबांकुरा भारत माता का सपूत वीर जवान, विधाता ने देश रक्षा के लिए इस धरा पर उसका किया आगमन।
जब जब वीर बालकों ने वीरगति पायी, देश का यश गौरव बढ़ाया, धन्य है वो माँ जिसने मातृभूमि पर अपना लाल चढ़ाया।।

— मेजर आशुतोष गर्ग (रिटायर्ड)

आपको हमारा यह अंक कैसा लगा अपनी राय एवं अपने सुझाव हमें निम्न ई–मेल smsamvad@gmail.com पर अवश्य भेजें।

सम्पादकः प्रमोद कामत, **उप–सम्पादकः** दीपक स्वरूप
संरक्षकः डा. हेमेन्द्र सिंह यादव **सलाहकार मण्डलः** रवि पाराशर एवं विनोद राजपूत